'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ३७ | वाराणसी, शनिवार, २८ मार्च, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

सर्वोदयनगर (अजमेर) २८-२-'५९

दिल्ली, पंजाब, मध्यप्रदेश, पेप्सू और कश्मीर के कार्यकर्ताओं के बीच

राजस्थानवालों को आज की इस चर्चा में नहीं बुलाया गया है; क्योंकि अभी हम राजस्थान में ही हैं। उनके साथ हमारी चर्चाएँ चलती ही रहेंगी।

मेरे कार्यक्रम के विषय में मैंने अभी इतना ही सोचा है कि यहाँसे कश्मीर जाऊँगा, वहाँ एक प्रेम का कार्य होगा। भूदान, ग्रामदान, शान्ति-सेना, सर्वोदय-पात्र आदि कार्यक्रम तो हैं ही, परन्तु वहाँ उनका उतना महत्त्व नहीं है। वहाँ जाकर कुछ काम बनेगा या नहीं, यह तो मैं भी नहीं जानता, पर वहाँ कश्मीर-निरीक्षण का कार्य तो होगा ही। उसका भी एक उपयोग है। मुझे वहाँ प्रेम मिलेगा तो मेरी ताकत बढ़ेगी। वहाँसे वापस कब आना होगा, यह मैं नहीं कह सकता। वहाँका निरीक्षण करके ही आगे के कार्यक्रम के बारे में निश्चित करना ठीक होगा। फिर भी अभी तो यही कहा जा सकता है कि वहाँसे लौटते समय पंजाब होते हुए जयपुर और जयपुर से इन्दौर पहुँचना है। इन्दौर के लिए मेरा बहुत आकर्षण है। उसमें कुछ ऐतिहासिक कारण भी हैं।

मध्यप्रदेश से अपेक्षा

मैं चाहता हूँ कि इन्दौर शहर एक सर्वोदय-शहर बने। मध्यप्रदेश में इन्दौर, धार और निमाड जिले ऐसे हैं, जिनमें बहुत 'वायटेलिटी' है। इसलिए इन जिलों में से कम-से-कम एक जिला अवश्य सर्वोदय-जिला बने, यह काम वहाँ हो सकता है। इन्दौर में वह शक्ति है। वहाँसे खानदेश नजदीक होने के कारण बम्बई प्रदेश पर भी असर डाला जा सकता है। पास ही सरगूजा जिला भी है, वहाँ भी उस काम का परिणाम हो सकता है।

कश्मीर से देहली नजदीक है। इसलिए शायद वहाँ जाना होगा। वहाँ पहुँचने में अभी हमें काफी समय लग जायगा। इसलिए आप दिल्लीवालों को पूर्व तैयारी के लिए काफी समय मिल गया। मध्यप्रदेश में तो मैं पहले ही घूम चुका हूँ। अब वहाँ दुबारा जाना होगा। विन्ध्यप्रदेश भी दिल्ली के रास्ते में पड़ा था। इन्दौर अब तीसरी बार जाना होगा। वहाँसे एक रास्ता बंगाल के लिए है और दूसरा काशी तथा नेपाल के लिए। नेपाल के लोग भी मुझे बुला रहे हैं। इसलिए इन्दौर से उधर जा सकता हूँ। इधर जबलपुर भी जा सकता हूँ। खानदेश की तरफ जाना हो तो सीधा जा सकता हूँ। इस तरह मध्यप्रदेश से मैं कहीं भी जा सकता हूँ। इन्दौर, जबलपुर और नागपुर ये तीनों ऐसे स्थान हैं, जो भारत के मध्यबिन्दु हैं। वहाँ जो काम होगा, उसका परिणाम चारों ओर हो सकता है। इसलिए मैं इन्दौर से बहुत अपेक्षाएँ रखता हूँ। जैसे दक्षिण में मैंने कहा था कि बँगलोर शहर सर्वोदय-शहर बने तो उसका असर सारे दक्षिण पर होगा, वैसे ही इन्दौर के सर्वोदय-शहर बनने से दिल्ली तक असर हो सकता है। वहाँ हर घर में सर्वोदय-पात्र हो, शान्ति-सेना खड़ी हो तो उसे सर्वोदय-शहर बनाने में आसानी होगी। इन्दौर, निमाड या धार—इसमें से किसीको भी सर्वोदय-जिला बनाना हो तो आपके पास अभी बाँटने लायक जितनी जमीन है, उतनी तत्काल बाँट दीजिये। इन्दौर को सर्वोदय-नगर बनाने में तथा किसी एक जिले को सर्वोदय-जिला बनाने में आपकी सम्पूर्ण शक्ति लगे तो मैं भी अपनी समस्त शक्ति लगाने को तैयार हूँ। इस प्रकार का ठोस कार्य वहाँ बने तो उसके लिए जितना समय देना पड़े, उतना समय मैं दूँगा।

यही बात मैंने राजस्थानवालों से भी कही है कि उन्हें जहाँ सम्भव लगता हो, वहाँ किसी एक जिले में पूरी शक्ति लगाकर काम करना चाहिए। उसके साथ मैं भी अपनी शक्ति लगाने के लिए तैयार हूँ। अब मैं जरा आजमाना चाहता हूँ, राजस्थानवाले कहीं—किसी जिले में—ताकत आजमाने के बारे में सोच रहे हैं, ऐसा मैं मानता हूँ। अभी यहाँ सम्मेलन होने के कारण उनकी पूरी शक्ति नहीं लग सकती थी। खैर!

दिल्लीवाले सोचें

अब दिल्लीवालों से क्या कहा जाय? अभी जो कार्यक्रम मैंने आपके सामने रखा, वही दिल्लीवालों के लिए भी लागू होता है। वे इसपर सोचें! दिल्ली भारत की राजधानी है। वह अगर सर्वोदय की भी राजधानी बनती तो कितना अच्छा होता। वहाँ गांधीजी की समाधि भी है। दिल्ली में सर्वोदय का काम होने से सारे भारत पर असर होगा। इसलिए दिल्लीवाले सोचें! अब मैं दिल्ली के नजदीक हूँ। इस विषय पर विशेष चर्चा करने पर कहींसे भी आप मेरे पास आ सकते हैं।

मैं चाहता हूँ कि दिल्ली में प्रधान मंत्री से लेकर भंगी तक हर-एक के घर में सर्वोदय-पात्र हो। इसके लिए भी मैं मदद देने को तैयार हूँ।

पंजाब आ रहा हूँ

पंजाब में मैं कोरा मन लिये जाऊँगा। वहाँ तरह-तरह के मसले हैं। किसीमें भी मेरे सहयोग की जरूरत हो तो मैं उसके लिए तैयार हूँ। पंजाब में मैं कम-से-कम लोगों को साथ ले जाना चाहता हूँ। वहाँके लोगों को भी अधिक संख्या में मेरे साथ रहने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। मेरे साथ किसको रखना है या किसको नहीं रखना, यह भी वहींके लोग तय करें और यहाँसे जाकर काम में लग जायँ। मैं पंजाब में ८ साल के बाद आ रहा हूँ तो उसके लायक कुछ काम वहाँ होना चाहिए। मेरे आने से पंजाब के सभी झगड़े मिटें, यही मेरी कामना है।

कश्मीर में कई प्रश्न हैं। मेरे पास उनका कोई 'जजमेन्ट' नहीं है, मुझे केवल निरीक्षण-परीक्षण करना है। वहाँ आने पर क्या सूझेगा, क्या मदद दे सकूँ, यह वहीं तय करना होगा। मेरा शरीर कमजोर है। इसलिए पड़ाव पर पहुँचने के बाद मुझे आराम मिलना चाहिए। वह भी शारीरिक आराम नहीं, चिन्तन और अध्ययन के लिए समय चाहिए। वह समय मुझे मिलता रहे तो जितना चलाओ, उतना चलने के लिए मैं तैयार हूँ।

आप सब सहयोग दें

आज शान्ति-सेना के लिए मैंने रास्ता खोल दिया है। इसलिए अब छोटी-छोटी मुश्किलें मेरे सामने पेश न करो। जो सत्य-निष्ठ हों, पक्षातीत भूमिकावाले हों, पूरा समय देने की इच्छा रखते हों, वे सभी लोग शान्ति-सेना में सम्मिलित हो सकते हैं। जितने लोग गांधी-विचार माननेवाले हैं, वे कुल-के-कुल शान्ति-सैनिक बन जायँ। उनसे सहयोग माँगने का मुझे अधिकार है। अब यदि वे सहयोग न देंगे तो जिम्मेवारी उनकी है, मेरी नहीं।

प्रश्न : क्या जबलपुर शहर भी सर्वोदय-शहर बन सकता है?

विनोबा : यह बात आप सेठ गोविंददासजी बोल रहे हैं? राजनीति के झमेले को छोड़कर यदि आप इस आन्दोलन में कूद सकते हैं तो बहुत बड़ा काम होगा। गीता में कहा है कि 'एकाग्रता के बिना कोई कार्य संभव नहीं'। अगर आप सर्वोदय-जिला बनाते हों तो जिन्दगी के अन्तिम पर्व में आप के हाथों से यह सर्वोत्तम काम होगा।

मेरे मन में क्या है?

प्रश्न : इन दिनों आपके मन में क्या विचार चल रहा है?

विनोबा : ऐसे विचार में मैं नहीं पड़ना चाहता हूँ। मैं सिर्फ यही चाहता हूँ कि सारे हिन्दुस्तान में एकता हो जाय। इसलिए सर्वोदय-पात्र और शान्ति-सेना के अतिरिक्त और कोई दूसरा विचार मैं नहीं रखता। भारत में ३७ करोड़ लोग हैं। उनमें से सिर्फ ७५ हजार शान्ति-सैनिक मुझे मिल जाते हैं तो मेरा काम हो जाता है। एक शान्ति-सैनिक ५००० मनुष्यों के साथ परिचय रखेगा। उस सेवक से हम परिचय रखेंगे। इस तरह ७५००० शान्ति-सैनिकों के जरिये सारे भारत से हमारा परिचय हो जायगा। फिर समस्त समस्याओं का समाधान करने की कुंजी हमारे हाथों में आ जायगी। इसलिए इन दिनों हमारे मन में केवल सर्वोदय-पात्र और शान्ति-सेना का विचार है।

प्रश्न : इन दिनों लोग नगराभिमुख होते जा रहे हैं, उन्हें ग्रामाभिमुख कैसे बनाया जाय?

विनोबा : नगराभिमुख होने का यह एक प्रवाह ही है। इसी प्रवाह में हमें काम करना है, लेकिन हमें यह भी समझ लेना चाहिए कि आज ग्रामवासी लोग भी ग्रामाभिमुख नहीं हैं। 'जो काम मुझे करना पड़ता है, वह काम मेरे बच्चे को न करना पड़े और वह आराम की जिन्दगी बसर कर सके'—यह आज के हर पिता की आकांक्षा है। लोग कम-से-कम परिश्रम में ज्यादा-से-ज्यादा पाना चाहते हैं, इसलिए 'विलेजर्स' भी 'विलेज माइंडेड' नहीं रह गये हैं।

मैं आपसे कहना चाहता हूँ कि आपको गाँववालों के अनुकूल वातावरण तैयार करना होगा और वह ग्रामदान के जरिये ही हो सकता है। अन्नोत्पादन की क्षमता बढ़ानी होगी। सहकार की भावनाएँ लोगों में लानी होगी। एक प्रेम-समाज ही बनाना होगा। आज तो सारा विपरीत ही हो रहा है। उस विपरीत परिस्थिति को बदलने के लिए हमें समग्र शक्ति देहातों में लगानी होगी। एक वकील ने हमसे पूछा कि आपके कार्यक्रम में मैं क्या कर सकता हूँ। मैंने उसे जवाब दिया कि 'आप तो बहुत कुछ कर सकते हैं। अरबी में वकील का अर्थ बचानेवाला होता है। अल्लाह को 'तू वकील है' ऐसा कहा गया है। हमें पाँच लाख गाँवों के लिए पाँच लाख वकीलों की आवश्यकता है। आप तो एक ही हैं। मैं आपको गाँव-पंचायत में स्थान दूँगा। फिर आपको किसी प्रकार की चिन्ता नहीं रह जायगी। सिर्फ पंचायत के क्षेत्रीय झगड़े बाहर न जाने का उत्तरदायित्व आप-पर रहेगा'।

देहातों को हम आकर्षक बनाते हैं तो वहाँ शहर के बहुत लोग आ जायँगे। ग्रामदान के जरिये हम उसी प्रयत्न में संलग्न हैं। इसीलिए तो मैं वकीलों को समझाता हूँ कि ग्रामस्वराज्य में झगड़े मिट जायँगे, फिर आपके लिए कोई भी काम नहीं रह जायगा। आप बेकार हो जायँगे। उस समय मैं फिर आपको ग्रामदानी गाँवों में इसी तरह का काम दूँगा।

मेरी नहीं, मेरे विचार की जरूरत है

प्रश्न : दिल्ली में संवेदनशीलता कम हो गयी है। इसलिए अब वहाँ आपकी प्रेरणा की आवश्यकता है और अब आपको वहीं पधारना होगा।

विनोबा : दिल्ली को मेरी जरूरत है, ऐसा अगर हम मानते हैं तो इससे ज्यादा दूसरा भ्रम क्या हो सकता है? दिल्ली में मेरी नहीं, मेरे विचारों की जरूरत है। वहाँ मेरे विचारों में सहानुभूति रखनेवाले पचास फी सदी लोग पार्लमेन्ट में हैं। अगर मैं माँग करूँ तो वहाँ और भी अधिक लोग मिल सकते हैं।

एक भाई ने कहा है कि दिल्ली में पचास प्रतिशत लोग आपके विचारों को मान्यता देनेवाले नहीं हैं। क्या वहाँ मेरे विचारों के लिए हाथ ऊपर उठानेवाले इतने लोग भी नहीं मिलेंगे? अगर नहीं मिलते हैं तो इसमें उनका दोष नहीं, हमारा ही दोष है। हम लोग उनके पास पहुँच नहीं पाते हैं। हमारा साहित्य उनके पास पहुँचना चाहिए। सत्यमूर्भाई और ब्रजकिशन भाई वहाँ काम करते हैं, लेकिन अभी तक उन्होंने अपनी जमात नहीं बनायी है। वे लोग प्रेम से सबके पास अपने विचार पहुँचाते जायँ तो मैं समझता हूँ कि वहाँ अच्छी जमात बन सकती है।

शान्तिसेना कामयाब हो सकती है

प्रश्नः ग्वालियर और भिंड में डाकुओं की समस्या है, इसलिए पहले आपको वहाँ पधारना चाहिए।

विनोबा: वहाँके लोग बहुत पीड़ित हैं। वे जिले ही डाकुओं के जिले हो गये हैं, यह मैं जानता हूँ, फिर भी मैं चाहता हूँ कि वहाँ शान्ति-सेना संगठित हो जाय। डाकुओं का हृदय बहुत सरल होता है। इसलिए शान्ति-सेना उनके हृदय-परिवर्तन में कामयाब हो सकती है। हाँ, अगर वहाँके डाकू शिक्षित हों या मिलिटरी से लौटे हुए हों तो उसमें जरा कठिनाई होगी। अन्यथा कोई कठिनाई नहीं होगी। रविशंकर महाराज ने गुजरात में डाकुओं के बीच काम किया और उनका परिवर्तन किया है। इसलिए आप शान्ति-सेना संगठित कर डाकुओं के हृदय-परिवर्तन का काम कीजिये।

आप वहाँ मेरे पधारने पर काम होगा, ऐसी आशा रखेंगे तो हिन्दुस्तान के लिए बहुत बड़ा खतरा होगा। मैं पदयात्रा कर रहा हूँ। पदयात्रा करनेवाला शख्स कहाँ कब पहुँचेगा—यह कह नहीं सकते। इसलिए पदयात्रा करने का सबसे बड़ा लाभ ही यह है कि स्थान-स्थान के लोगों को अपनी जिम्मेवारी महसूस होती है।

शान्ति-सेना की मर्यादा

प्रश्नः—आज आपने राजनैतिक पक्ष के लोगों के लिए भी शान्ति-सेना के द्वार खोल दिये हैं। इसलिए क्या अब शान्ति-सैनिक इलेक्शन में भाग ले सकते हैं?

विनोबाः—वे इलेक्शन में भाग नहीं ले सकते। जो पक्षातीत होंगे, वे ही शांति-सेना में सम्मिलित होंगे। यदि ऐसा न हुआ तो यह एक नाटक ही हो जायगा।

पक्षमुक्त होना संन्यास की बात है और पक्षातीत होना योग की बात! किसी एक पक्ष के लिए मन में 'लायल्टी' है तो फिर इलेक्शन में तरह-तरह के झगड़े होते हैं। इसलिए इलेक्शन में खड़े होनेवाले भाई इसमें नहीं आ सकते। पाँच हजार लोगों के साथ परिचय रखनेवाला, उन्हें शारीरिक तथा मानसिक शान्ति पहुँचानेवाला, सत्यनिष्ठ, पक्षातीत शख्स ही इसमें आ सकता है। हाँ, वह किसी पक्ष का प्रायमरी मेम्बर रह सकता है।

डाकुओं की सेवा

प्रश्नः—डाकुओं की समस्या?

विनोबाः—ऐसी मिसालों का मुझपर असर नहीं होता। सतयुग में भी रामजी की पत्नी को भगा ले जानेवाला रावण हो गया—उससे क्या है? आप 'एक्सट्रीम केसेस' और बुरे उदाहरण लेंगे तो अब काम नहीं होगा। मनुष्य के स्वभाव में ऐसी बुराइयाँ कभी-कभी आ जाती हैं।

प्रश्नः—डाकुओं में शांति-सैनिक कैसे काम करेगा?

विनोबाः—सबके साथ परिचय रखेगा, सेवा करेगा। डाकुओं की भी सेवा कर सकता है—ऐसा सिद्ध करेगा। डाकुओं से काम नहीं हो सकता है, ऐसा सवाल जिसके मन में आता है, उसको शांति-सेना में दाखिल नहीं होना चाहिए।

प्रश्नः—जो बिलकुल भूखा है, उससे आप क्या माँगेंगे?

विनोबाः—जो बिलकुल भूखा है, उससे मुझे माँगना नहीं है, पर जो आधा पेट खा रहा है, उससे मैं माँगता हूँ। मैं बिलकुल निठुर बन गया हूँ। परन्तु आप हमेशा 'हार्ड केसेस' लेकर सोचते हैं। कुछ केसेस हार्ड होंगी और कुछ नहीं होंगी, इसलिए ऐसा सोचकर अपने दिमाग की शक्ति क्यों खोनी चाहिए?

प्रश्नः—जितने ग्रामदान हुए हैं, उनमें से वास्तव में कितने गाँवों में तबदीली हुई है?

विनोबाः—मैं नहीं जानता और न वह मेरी जिम्मेवारी ही है। जितने गाँव सच्चे हैं, उनमें काम होगा और वे सच्चे होंगे तो चमक उठेंगे। ग्रामदानी गाँव परीक्षा के क्षेत्र हैं, ऐसा नहीं समझना चाहिए, सेवा के क्षेत्र हैं, इसलिए सेवा के लिए हमें वहाँ पहुँचने और उन्हें मदद देने की जरूरत है। ● ● ●

उत्तरप्रदेशीय कार्यकर्ताओं के बीच

सर्वोदय-नगर (अजमेर) १-३-'५९

अपने काम की व्यवस्थित योजना बनाइये!

आजकल सबकी सहानुभूति प्राप्त करने की कला सध रही है। उत्तरप्रदेशवालों को भी यह कला सधी है, ऐसी मैं आशा कर सकता हूँ।

मैं आप लोगों के सामने अभी कोई विचार नहीं रख रहा हूँ। सिर्फ प्रकट चिन्तन के तौर पर जो कुछ मैं व्यक्त करूँ, उसपर आप सोचें, ऐसी मेरी अपेक्षा है।

उत्तरप्रदेश बहुत बड़ा प्रान्त है। बड़े प्रांतों की जिम्मेवारी चन्द लोगों पर आती है तो ठीक तरह से काम को न्याय नहीं मिल पाता। इसलिए अगर हम बड़े प्रांतों को दो-तीन भागों में विभाजित कर दें तो लाभ होगा। उत्तरप्रदेश के भी तीन डिविजन बना देने से काम तो अधिक होगा ही, पर वह इंतजाम के लिए भी ठीक होगा। अलग-अलग क्षेत्रों के कार्यकर्ता महीने में एक दिन मिल सकते हैं। गुजरात के कार्यकर्ताओं ने भी इसी तरह महीने में एक बार मिलना निश्चित किया है।

सर्वोदय-पात्र और शांति-सेना के बारे में भी मैं आपसे इतना कहना चाहता हूँ कि शांति-सेना की दृष्टि से किसी एक शहर को चुनें और सर्वोदय-पात्र की दृष्टि से किसी एक देहात को, जो नमूना बन सके। अपनी शक्ति के अनुसार आप अधिक शहर या कोई एक पूरा जिला भी चुन सकते हैं। इस तरह जमकर कहीं ठोस काम करने से संभवतः काम में अधिक प्रगति होगी।

साहित्य-प्रचार की ओर ध्यान दें!

मुझे आपके साहित्य-प्रचार से जरा भी संतोष नहीं है। मेरी समझ में नहीं आता कि 'भूमिपुत्र' के इक्कीस हजार ग्राहक हैं तो 'भूदान-यज्ञ' के ग्राहक उससे ज्यादा क्यों नहीं होने चाहिए? समस्त बिहार, उत्तरप्रदेश, जबलपुर, इटारसी तक फैला हुआ मध्य-प्रदेश इतना पूरा हिंदीभाषी विभाग है। उसमें 'भूदान-यज्ञ' के लिए काफी अवकाश है। गुजराती भाषी लगभग डेढ़ करोड़ हैं और हिंदीभाषी करीब १२ करोड़। फिर 'भूदान-यज्ञ' के अधिक-से-अधिक ग्राहक क्यों न बनाये जायँ?

इन सात-आठ वर्षों में सर्वोदय का एक प्लेटफार्म बना है। इस प्लेटफार्म पर जो सभाएँ होती हैं, उनमें विरोधी पक्ष के लोग

भी सम्मिलित होते हैं! जनता भी बड़े चाव से विचार सुनने को आती है। इतना सब होते हुए भी अभी तक हमारा प्रेम नहीं बना है। उसे बनाने के लिए आप लोगों को गंभीरतापूर्वक सोचना चाहिए। मैं चाहता था कि सन् ५७ से पहले ही वह बन जाय, लेकिन नहीं बन सका। अब भी आपको उस बारे में सोचना चाहिए।

आप लोग शहर और देहात में घूमते हैं। वहाँ आपको व्यापक जीवन की दृष्टि मिलती है। अनेकविध अनुभव भी आते हैं। प्रेस बनने से ही आप वे सारे लिख सकते हैं। आपको अपने अनुभव लिखने चाहिए। हमारे कुछ कार्यकर्ता ऐसे भी हैं, जिनमें लिखने की शक्ति नहीं है। लेकिन उनके पास भी काफी अच्छे अनुभव होते हैं। इसलिए आप एक-दो ऐसे कार्यकर्ता रखें, जो उनके पास पहुँचें, उनके काम को देखें। उनसे बात करें और उनके अनुभवों को अभिव्यक्त कर दें। प्रयत्क्ष दर्शन बहुत परिणामकारी होता है। युद्ध में युद्ध के मोर्चे पर क्या चल रहा है, इसकी बराबर रिपोर्ट होती है। वैसे ही हमारे कामों की रिपोर्ट होनी चाहिए। कहीं अखण्ड पदयात्रा चल रही है। कहीं भूमि-वितरण हो रहा है, कहीं निर्माण का काम हो रहा है, कहीं ग्रामदान हो रहे हैं और कहीं ग्राम-संकल्प हो रहे हैं। उन सबके संबंध में हम यथास्थित लिखते जायँ तो हमारा 'प्रेस' खूब अच्छा चलेगा।

आजकल मेरा उत्साह बढ़ रहा है। नेताओं से हमारी बातचीत होती है तो हम देखते हैं कि उनको भी यह काम आवश्यक मालूम होता है। इस काम की ओर वे सारे श्रद्धा से देखते हैं। हमारे लिए बहुत ही अनुकूलता बन रही है। इन दिनों मैं जहाँ भी जाता हूँ, वहाँ सरकारी अधिकारी, शिक्षक आदि वर्गों के सम्मेलन होते हैं। वे लोग पहले इस विचार को सुनने की जिम्मेवारी नहीं समझते थे। लेकिन अब उन्हें बड़े चाव से और प्रेम से विचार सुनते देखता हूँ। अभी नागपुर कांग्रेस में जो प्रस्ताव पास हुआ है, उसमें भी आपका असर है। इसलिए मैं कहना चाहता हूँ कि आपके लिए बहुत अनुकूलता पैदा हो गयी है। इसकी अनुभूति आपको हो तो बहुत काम हो सकता है।

विद्यार्थियों का सवाल

प्रश्न : इन दिनों विद्यार्थियों का दिमाग कुछ बिगड़ा हुआ-सा लगता है। उसके लिए क्या किया जाय?

विनोबा : आप विद्यार्थी, शिक्षक, आदिवासी, हरिजन ऐसे टुकड़े करते रहेंगे तो अपने काम में नाकामयाब सिद्ध होंगे। इसलिए आपको ऐसे खण्ड करने के बजाय शान्ति-सेना, सर्वोदय-पात्र का काम करना चाहिए। आपका वह काम मजबूत होगा तो वे ही लोग आपके पास आयेंगे और आपसे सेवा लेंगे।

जहाँ विशिष्ट जनों की बात होती है, वहाँ तरह-तरह की कठिनाइयाँ पैदा होती हैं। कोई हरिजन हैं या कोई विद्यार्थी हैं, उनके लिए कुछ करने का सोचेंगे तो उनका अलग अस्तित्व हम कबूल करते हैं, ऐसा होगा। हमें अलग-अलग टुकड़े करने-वाली सेवा नहीं करनी है। हमें समाज का परिवर्तन कर नये मूल्यों की स्थापना करनी है। इससे सारी समस्याओं का हल हो जायगा।

आपकी ख्याति दुनिया में ऐसी होनी चाहिए कि लोग आपको शान्ति-स्थापना करनेवालों की जमात मानें। केरल में शान्ति-सेना का काम हुआ, बड़ोदा तथा अहमदाबाद में भी हुआ, इससे वहाँ शान्ति-सेना की प्रतिष्ठा बनी है। वैसे ही अपने सारे काम की प्रतिष्ठा होनी चाहिए। हम सर्वसाधारण पर कब्जा पा लें तो यह एक प्रतिष्ठा होगी।

सेवकों की संख्या

प्रश्न : सेवकों की संख्या कैसे बढ़ाई जाय?

विनोबा : आप सारे-के-सारे गृहस्थाश्रमी हैं! इसलिए मुझे आश्चर्य होता है कि आपसे यह संख्या कैसे नहीं बढ़ रही है?

(यह सुनकर सारी सभा हँसने लगी।)

यह तो मैंने विनोद किया, लेकिन सचाई यह है कि आपका लड़का ही इस काम में नहीं लगा है। आप अपने जीवन में बहुत त्याग करते हैं तो आपके लड़के की माता उसे समझाती है कि तू अपने सामने और कोई भी आदर्श रख, पर अपने बाप का आदर्श हरगिज मत रख। उसके जैसा बेवकूफ मत बन। इसका अर्थ ही यह है कि आपने घर में यह विचार समझाया नहीं। इसीलिए तो आप अपने में से ही आदमियों का निर्माण नहीं कर पा रहे हैं।

(श्री ब्रह्मदेव वाजपेयी ने बताया कि पहले उत्तरप्रदेश के शान्ति-सैनिकों की संख्या कम थी। लेकिन अब अजमेर में वह संख्या दो सौ तक पहुँच गयी है।)

विनोबा : सर्वोदय-पात्र के लिए सेवक कहाँ हैं? यह सवाल लोग आपसे पूछें तो बताइये कि देखिये, ये सेवक हैं—अयं जयद्रथः, अयं सूर्यः—यह जयद्रथ है, यह सूर्य है।

इस काम के लिए कुछ विद्यार्थी आते हैं, लेकिन वे कुछ ही समय बाद वापस लौटकर चले जाते हैं। लौटकर जानेवालों को मैं दोष नहीं देना चाहता। लेकिन आपसे कहना चाहता हूँ कि इस काम में कहीं-न-कहीं हमसे गलती होती है। इसलिए इस सम्बन्ध में हमें गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिए। ●●●

प्रार्थना-प्रवचन

गांगड (अहमदाबाद) १२-१२-'५८

ग्राम-स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और उसे हम प्राप्त करके रहेंगे!

['हमारे जीवन को बदलने की ताकत दो ही चीजों में है—आत्मज्ञान और विज्ञान में।' अहमदाबाद जिले के पहले पड़ाव, मुनि संतबालजी के आश्रम गूंदी की विशाल सभा को संबोधित करते हुए विनोबा ने कहा। दूसरे ही दिन १७ दिसम्बर को 'गांगड' नामक छोटे से गाँव में मानो आत्मज्ञान और विज्ञान साकार होकर मिले। गाँव के बाहर हरे-भरे खेतों के बीच सभा के लिए साफ किया हुआ मैदान मानव-मेदिनी से भरा हुआ था। आस-पास के गाँवों के किसान, स्त्री-पुरुष और नजदीक के अहमदाबाद शहर के नागरिकों को संबोधित करते हुए श्री जवाहरलालजी की उपस्थिति में एक ऊँचे मंच पर से भारत की आत्मा तथा आत्मज्ञान के प्रतीक विनोबा ने जो सन्देश दिया, वह यहाँ दिया जा रहा है।—सं०]

हम एक बनें, हम नेक बनें

हमारा देश बहुत विशाल है। यहाँ अनेक भाषाएँ हैं, अनेक धर्म हैं। अनेक जातियाँ हैं, अनेक प्रदेश हैं एवं अनेक रीति-रिवाज हैं, वास्तव में यह विविधता ही हमारे देश का सौन्दर्य है। अनेकता में एकता उत्पन्न होने से माधुर्य पैदा होता है। लेकिन उसका समुचित उपयोग न किया जाय, एक-दूसरे के साथ

मेल साधने की योजना न बनायी जाय तो उससे विसंवाद, झगड़े एवं क्लेश ही पैदा होते हैं। झगड़ों से राष्ट्रीय शक्तियाँ क्षीण हो जाती हैं। इसलिए आज की सर्वाधिक आवश्यकता देश के हितों में संलग्न रहनेवाली समस्त शक्तियों को एकत्र करने की है। उसी आवश्यकता की पूर्ति करना ही मैंने अपना ध्येय माना है। 'एक बनें और नेक बनें' यही मेरी आकांक्षा है। आप सभी इस दिशा मे अग्रसर हों तो निःसन्देह हम राष्ट्र में बहुत बड़ा काम कर सकते हैं।

मैं पंडितजी की उपस्थिति में यह बात आपसे कह रहा हूँ। इसे आपको अच्छी तरह समझ लेना चाहिए कि राष्ट्रीय हितों के लिए अब अलग-अलग ढंग से विचार रखनेवाले समस्त लोगों को संगठित करना बहुत आवश्यक है।

एक समय था, जब हम लोग स्वराज्य के लिए लड़ते थे। उन दिनों सभी कार्यकर्ता जनता में पहुँचकर प्रत्यक्ष काम किया करते थे। पंडितजी भी उन्हीं लोगों में से एक हैं। किंतु जब स्वराज्य प्राप्त हो गया और सत्ता हमारे हाथों में आ गयी, तब लोगों का यह अपेक्षा करना स्वाभाविक ही था कि इस सत्ता का उपयोग लोक-सेवा में हो। गरीबों के उत्थान, दलितों के विकास और जनता की तरक्की के कामों में सत्ता का इस्तेमाल किया जाय। अतएव उसकी जिम्मेवारी पंडितजी पर आ पड़ी। अब ये सत्ता सँभाल रहे हैं। फिर भी आज तक इनका लोक-नेतृत्व मिटा नहीं। ये लोक-नेता हैं। निर्वाचन में चुनकर आनेवाला व्यक्ति लोक-नेतृत्व खोकर लोक-सेवक बन जाता है। लेकिन पंडितजी आज भी अपनी शक्ति से लोक-नेता बने हुए हैं। इससे आज सरकार द्वारा सेवा हो रही है। फिर भी हमें मान लेना चाहिए कि सारी सेवाएँ सरकार नहीं कर सकती। यह सरकार के वश की बात नहीं है। पूरी सेवा के लिए लोक-जागृति आवश्यक है। इसलिए जब तक लोग प्रबुद्ध नहीं हो जाते, तब तक शुभ उद्देश्य रखने के बावजूद सरकार कुछ नहीं कर सकती। ऋग्वेद में लिखा है, 'जो शख्स अपना शक्ति-सर्वस्व लगाने के बाद भगवान से मदद माँगता है, उसे मदद मिलती है। अन्यथा मदद नहीं मिलती'। आलसी आदमियों को सर्व-शक्तिमान भगवान भी मदद नहीं दे पाता तो सरकार क्या देगी? लोगों का उत्थान करने की कीमिया सरकार के पास नहीं है। वह तो जनता को अपने पुरुषार्थ से हासिल करनी होगी। इसलिए राष्ट्र-निर्माण का काम करने की जिम्मेवारी हम पंडितजी पर डालें तो वे उसे निभा सकते हैं। लेकिन उसकी पूर्ति हमें और आपको मिलकर करनी होगी।

चीन का सबक

आजकल बहुत से लोग विदेश-यात्रा करते हैं। चीन में जाकर लौटे हुए लोग उस देश की बड़ी प्रशंसा किया करते हैं। वे प्रशंसा करनेवाले लोग केवल कम्युनिस्ट विचारधारा के समर्थक ही नहीं, बल्कि दूसरे भी हैं। उनका कहना है कि चीन की जनता में निर्माण के कार्यों के लिए काफी उत्साह है। वहाँकी सरकार जो भी योजना बनाती है, उसमें जनता का पूरा सहयोग रहता है। चीन में हमारे ही देश की तरह जमीन की कमी है। फिर भी पैदावार अधिक है। प्रश्न होता है कि आखिर वहाँकी जनता में इतना उत्साह कैसे आया और हमारे यहाँ वैसा क्यों नहीं हो रहा है? इसका कुछ भी उत्तर देने से पूर्व हमें चीन की परिस्थिति का अवलोकन कर लेना चाहिए।

चीनवालों के पास पहले कोई विशेष सत्ता नहीं थी। फिर भी जो थी, उसीके बल पर उन्होंने अपने देश की सारी जमीन लोगों में बाँट दी। इससे जनता में सरकार के प्रति आस्था उत्पन्न हुई। लोग समझने लगे कि सरकार हमारे ही हित-संरक्षण के लिए कार्य कर रही है। उसके बाद वहाँकी सरकार ने जनता से 'को-आपरेटिव', छोटा-छोटी सहकारी संस्थाएँ बनाने के लिए कहा। जनता मान गयी। फिर बड़ी-बड़ी सहकारी संस्थाएँ खड़ी करने की योजना प्रस्तुत की तो जनता उससे भी सहमत हो गयी। उसके बाद सरकार ने लोगों से सम्मिलित कृषि (कलेक्टिव फार्मिंग) करने के लिए कहा। अब वहाँकी सरकार एक कदम आगे बढ़कर जनता को समझाने लगी है कि 'आप लोग 'कम्यून' बनाइये, याने हजार-दो हजार लोग मिलकर साथ-साथ खेती करिये।' लोग यह भी करने लगे हैं। इस प्रकार वहाँकी जनता में उत्साह पैदा हुआ है।

पिछले ८ वर्षों से मैं क्या कह रहा हूँ? हमारे देश में जितने भी दीन-हीन, दुःखी, गरीब, भूमिहीन और साधनहीन हैं, उन्हें हमें सबसे पहले राहत पहुँचाने का काम करना चाहिए। भूदान-आन्दोलन के जरिये यह बात हमने जनता तक पहुँचाने की पूरी कोशिश की है। मुझे यह कहने में खुशी होती है कि लोगों ने भी हमारी बात को समझने का प्रयत्न किया है। लगभग ६ लाख लोगों ने हमें जमीन का दान दिया है, यह कोई सामान्य बात नहीं है। मेरे पास किसी प्रकार की सत्ता नहीं है और मैं सत्ता पर विश्वास भी नहीं करता। सिर्फ करुणा और प्रेम की बात लेकर हमने जनता तक पहुँचने की कोशिश की है। ऐसी स्थिति में यह एक बहुत बड़ा काम लोगों ने कर दिखाया है। अपने इसी काम के आधार पर मैं कह सकता हूँ कि जो चीज जनता चाहती है, वह सरकार की ओर से हो तो निश्चय ही सरकार को जनता का पूरा सहकार मिल सकता है।

यह कैसा अर्थशास्त्र है?

भूदान-आंदोलन पर कुछ अर्थशास्त्रज्ञों ने कुछ आक्षेप किये हैं। मैं उन्हें अर्थशास्त्रज्ञ नहीं, अनर्थशास्त्रज्ञ कहता हूँ। शंकराचार्य ने भी कहा है कि 'अर्थशास्त्री याने अनर्थशास्त्री'। पुस्तकों में बँधा हुआ अर्थशास्त्र एडम स्मिथ का हो या उससे भी अधिक सुधरा हुआ किसी दूसरे का हो, अपने देश के लिए जैसा का तैसा उपादेय नहीं हो सकता। गणित सब देशों के लिए समान हो सकता है, लेकिन अर्थशास्त्र समान नहीं होता। वह तो हर देश और हर जमाने के लिए स्वतंत्र ही होता है। हिन्दुस्तान का अर्थशास्त्र अलग रहेगा और रूस तथा अमेरिका का अलग। इतना ही नहीं, मैं तो यह भी कहना चाहता हूँ कि हिन्दुस्तान में भी आज का अर्थशास्त्र अलग होगा, कल का अलग होगा और संभव है परसों का उससे भी अलग हो। अर्थशास्त्र देश और काल के भेद से विविध हो सकते हैं और होते हैं, फिर भी अंग्रेजों द्वारा सिखाया हुआ अर्थशास्त्र पढ़नेवाले ज्ञानी लोग मुझसे कहा करते हैं कि 'दस एकड़वाले आदमी द्वारा किसी भूमिहीन को दो एकड़ दान दिया जाना तो ठीक है, लेकिन इस प्रक्रिया से जमीन के टुकड़े हो जायँगे और आगे जाकर इससे उत्पादन कम हो जायगा। इसलिए इस आन्दोलन से नैतिक शक्ति उत्पन्न होने के बावजूद आर्थिक दृष्टि से काफी नुकसान होने की संभावना है।' मैं इसपर उन्हें इतना ही कहा करता हूँ कि 'मेरा यह काम जमीन के टुकड़े करनेवाला नहीं है! इससे तो आजकल आप लोगों के हृदयों के जो टुकड़े हो गये हैं, उन्हें जोड़ने का काम कर रहा हूँ। इसलिए ऊपर-ऊपर से हमारा यह आन्दोलन जमीन के टुकड़े करनेवाला दिखाई देता है, लेकिन वास्तव में वह वैसा नहीं है। आप गहराई में उतरकर देखिये तो स्थिति का पता चल

जायगा।' इस प्रकार कहते हुए मैं धीरे-धीरे आगे बढ़ता गया। लोगों की सहानुभूति मिलती रही। फिर ग्रामदान की बात शुरू हो गयी। जबसे ग्रामदान की बात शुरू हो गयी, तबसे जमीन के टुकड़े करनेवालों के आक्षेप विलीन हो गये हैं। मुझे यह सूचित करते हुए बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि येलवाल परिषद् में देश के सभी नेताओं ने ग्रामदान-आन्दोलन के प्रति सहानुभूति व्यक्त करते हुए इसे प्रोत्साहन दिया है। हमारे आन्दोलन को जनता का सहयोग तो पहले मिल ही रहा था, फिर इसे इस तरह नेताओं का आशीर्वाद भी मिल गया।

ग्रामदान के अधिष्ठान पर हम ग्राम-स्वराज्य की इमारत खड़ी करना चाहते हैं। लोकमान्य तिलक ने घोषणा की थी कि 'स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है'। वह घोषणा साकार हुई। किंतु अब हमें बैठ नहीं जाना है। स्वराज्य के बाद ग्राम-स्वराज्य ही हमारी मंजिल है। ग्राम-स्वराज्य ही हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और उसे हम अवश्य प्राप्त करेंगे।

ग्रामदान के साथ शान्ति-सेना

लाखों एकड़ जमीन भूदान में प्राप्त होने के साथ-साथ अब तक हमें लगभग चार हजार ग्रामदान मिले हैं। किंतु हमारे देश में पाँच लाख गाँव हैं। उन सारे गाँवों का ग्रामदान कैसे हो, यह अब एक प्रश्न है।

मालकियत-विसर्जन की बात सुनकर कुछ लोग पूछते हैं कि अब कम्युनिस्ट और सर्वोदयवालों में क्या अन्तर रह गया? उन पूछनेवालों से मैं नम्रतापूर्वक कहना चाहता हूँ कि कम्युनिस्टों की और हमारी पद्धति में फरक है। हम यह प्रेमपूर्वक अहिंसात्मक तरीके से करना चाहते हैं, इसीलिए हमने ग्रामदान को अभयदान देनेवाला माना है।

इन दिनों मालिक-मजदूरों का झगड़ा होता है। वह झगड़ा तो मिटेगा तब मिटेगा, लेकिन आज तो वह कायम ही है। जब तक वह कायम है, तब तक बीच-बचाव की आवश्यकता रहेगी ही। शान्ति-सेना इसी आवश्यकता की पूरक है। शान्ति-सेना के जरिये मालिक और मजदूरों को आश्वस्त कर सके तो आगे जाकर हम मालिकों को यह भी समझा सकते हैं कि आप अपनी मालकियत छोड़ दें। इसमें आपका और देश का हित है। इस प्रकार मैंने ग्रामदान के साथ शान्ति-सेना का काम जोड़ दिया है।

शान्ति-सेना का आधार—सर्वोदय-पात्र

शान्ति-सेना के लिए आधार की जरूरत है। सशस्त्र सेना के लिए लोकमत का आधार होता है, उसी भाँति शान्ति-सेना के लिए भी आधार की जरूरत महसूस हुई। सरकार बनाने के लिए चुनाव में जो मत दिया है, वही मत उस सरकार द्वारा सशस्त्र सेना के संगठन में भी काम आता है, लेकिन शान्ति-सेना के संगठन के लिए ऐसा मत कैसे प्राप्त किया जाय, यही एक बड़ा प्रश्न मेरे सामने था। मान लो कि मैं सरकार से शान्ति-सैनिकों के लिए करोड़ रुपयों की माँग करूँ और सरकार उस माँग को मंजूर कर ले तो क्या फिर मैं जो शान्ति-सेना संगठित करूँ, वह सच्चे अर्थ में शान्ति-सेना होगी? वह शान्ति-सेना नहीं हो सकती। शान्ति-सैनिकों के लिए लोगों के स्वतन्त्र मत की अपेक्षा है। फिर वह मत भी इस प्रकार प्रगट होना चाहिए कि हर रोज लोग अपने घरों में अशान्ति को प्रोत्साहित न करने का भी संकल्प लें। सर्वोदय-पात्र उसी संकल्प का प्रतीक है। इसके लिए हिन्दुस्तान के हर घर में सर्वोदय-पात्र रखा जाय और उसमें प्रतिदिन छोटे बच्चे के हाथ से एक मुट्ठी अनाज डलवाया जाय। यह काम मैं यहाँ बैठी हुई सभी माताओं को सौंपता हूँ। वे इस संकल्प के साथ बच्चों से हर रोज एक मुट्ठी अनाज सर्वोदय-पात्र में डलवायें कि—'यह अनाज हम शान्ति-सेना के लिए छोड़ रहे हैं। अब हमारे घर से कोई भी अशान्ति का काम नहीं होगा।'

इस तरह आज हमारे तीन कार्यक्रम हैं :

(१) ग्रामदान-आन्दोलन, जिसके जरिये ग्राम-स्वराज्य की स्थापना करना, (२) ग्रामदान के बचाव के लिए शान्ति-सेना का संगठन करना और (३) शान्ति-सेना के आधार के तौर पर सर्वोदय-पात्रों की स्थापना करना।

आप लोगों ने सुना होगा कि राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू ने भी अपने यहाँ सर्वोदय-पात्र रखा है। उनके इस काम से मुझे बहुत मदद मिली है। यदि हम राष्ट्रपति के इशारे को समझें तो हमें अहिंसा की शक्ति प्रकट करने में मदद मिलेगी। जनरल अयूब खाँ के एक इशारे से चोरबाजारी और मिलावट करनेवाले समझ सकते हैं तो क्या हम अपने राष्ट्रपति के इशारों से नहीं समझ सकते? आप सभी लोग इसपर विचार कीजिये। आपके विचार करने से ही राष्ट्र में स्वतन्त्र शक्ति का निर्माण होगा। सारे दोषों का निराकरण होगा।

सरकारी आलोचना आवश्यक

पंढरपुर-सर्वोदय-सम्मेलन के अवसर पर मैंने कहा था कि देहात की योजना दिल्लीवाले नहीं कर सकते। उसे तो देहातवालों को ही करना होगा। वे करें! इसपर अखबारों में मुझपर काफी टीका-टिप्पणी की गयी और एक पत्रकारों की गोष्ठी में पंडितजी से भी पूछा गया कि बाबा के इस वक्तव्य पर आपका क्या मत है? पंडितजी ने उन्हें जवाब दिया कि बाबा के मन में क्या है, यह तो मालूम नहीं, पर सामान्यतः वे जो कह रहे हैं, वह ठीक ही है। इस प्रकार उन्होंने मेरी बात का ही समर्थन किया। अब आप यह बात भली-भाँति समझ लीजिये कि इनके और हमारे विचारों में बहुत फर्क मानना गलत है। गंगा और यमुना एकत्र होने के बावजूद जरा अलग-अलग बह रही हैं। इसमें यदि कुछ फरक है तो यही कि मैं साक्षात् जनशक्ति तैयार करना चाहता हूँ। इसीलिए लोगों के दुःख प्रकट कर दिया करता हूँ। उसमें लोगों को सरकार की आलोचना करने का आभास होता है।

सरकार मेरी है और मैं ही इसकी आलोचना न करूँ तो कैसे काम चलेगा? आलोचना करके मैं सरकार के काम की पूर्ति ही करना चाहता हूँ। याने सरकारी काम और जनशक्ति के काम दोनों मिल जायँ। यदि एक पर शून्य चढ़ता है तो वह दस (१०) का अंक बन जाता है। एक जनशक्ति है और शून्य है सरकार। दोनों मिलकर राष्ट्रीय शक्ति को दसगुनी करें।

❁ ❁ ❁

मेरी प्रार्थना!

पहले मैं भगवान से प्रार्थना करता था कि वह मेरी बुद्धि शुद्ध करे। लेकिन अब मैं आइक और ख्रुश्चेव की बुद्धि की शुद्धि के लिए प्रार्थना करता हूँ; क्योंकि मेरी बुद्धि बिगड़ने से केवल मुझे ही हानि है, किन्तु उन दोनों की बुद्धि बिगड़ने से तो सर्वनाश हो सकता है।

● ● ●

सरकारी कर्मचारियों के बीच

बढ़वाण सिटी ११-१२'५८

सरकारी अधिकारी निःस्पृह बनकर राष्ट्र की सेवा करें !

मैं आप लोगों को अपना साथी समझता हूँ। मैंने कई बार कहा है कि आप लोग पक्षमुक्त समाजवाले हैं। सरकारी कर्मचारियों से पक्षमुक्त रहने की ही अपेक्षा की जाती है। मिलिटरी सर्विसवाले हों, सिविल सर्विसवाले हों या किसी भी सर्विसवाले हों, किसी पक्ष के साथ जुड़े न रहें, यह आवश्यक है। मैं जब पक्षमुक्त समाज-स्थापना की बातें करता हूँ तो लोग मुझे पूछते हैं कि 'पार्टी पॉलिटिक्स के इस युग में आपकी यह बात कैसे चल सकती है ? इन दिनों सभी ओर पक्षवालों का जोर है। पत्तों के ही नगाड़े बज रहे हैं। इस स्थिति में आपकी इस तूती की आवाज को कौन सुनेगा ?' वे लोग नहीं जानते कि आज के भारत में बहुत बड़ा समाज पक्षमुक्त है। सभी सरकारी कर्मचारी पक्षमुक्त होकर ही काम करते हैं। न्यायाधीश, असेंबली के स्पीकर और राष्ट्रपति भी पक्षमुक्त ही होते हैं। इस प्रकार इतने महत्त्वपूर्ण लोगों के रहने पर भी क्या हम पक्षमुक्त समाज की स्थापना नहीं कर सकते ? हृदय में निष्ठा हो, आदर्शों के प्रति प्रेम हो और कुछ करने की लगन हो तो यह काम बहुत आसान है।

पक्षमुक्त समाज के हाथों में नियन्त्रण हो

पक्षमुक्त के बारे में अब लोगों का चिंतन चलने लगा है। आजकल सभी पक्षवाले भी इस बात से सहमत हो गये हैं कि कम-से-कम ग्राम-पंचायत, नगरपालिका तथा सभी स्थानीय संस्थाओं में पक्षभेद नहीं रहने चाहिए। 'राजनैतिक पक्षभेद के आधार पर ग्राम-पंचायत नहीं चल सकतीं।' इसका अर्थ ही यह हुआ कि ५ लाख गाँव पक्षमुक्त हो गये। ५ लाख गाँवों में लगभग ३० करोड़ लोग रहते हैं। अपने देश में इस समय साढ़े सैंतीस करोड़ लोग हैं। उनमें से जब मैं ३० करोड़ लोगों को पक्षमुक्त होते देखता हूँ तो मुझे बड़ा ही आनन्द होता है। यदि वे सारे सम्मिलित होकर अपना अभिक्रम प्रकट करें तो पक्षोंवाले लोगों पर, जो ऊधम मचाते हैं, नियंत्रण रखा जा सकता है।

आजकल ये पक्षोंवाले लोग जो काम करते हैं, उससे आप अपरिचित नहीं हैं। एक चुनाव से खाली होते ही दूसरे चुनाव की तैयारी में लगना उन्होंने अपना मुख्य काम मान रखा है। कोई भी शक्तिशाली समिति देखते हैं तो वे उसीपर टूट पड़ते हैं। उसे विकसित नहीं होने देते, क्योंकि उसमें भी उन्हें खतरा दिखाई पड़ता है। गाँव के हित और राष्ट्र के हितों की अपेक्षा वे अपने पक्ष के हितों को ही प्रधानता देते हैं। चुनाव के कारण हमारे यहाँ कितने घातक परिणाम प्रकट हुए हैं। इलेक्शन के समय जातिवाद का बोलबाला हो जाता है। पन्थों का विकृत रूप सामने आता है और धर्म के नाम पर खड़े संप्रदाय खुलकर खेलते हैं। इससे सभी ओर भेद-ही-भेद खड़े हो जाते हैं। पिता पुत्र के खिलाफ खड़ा होता है, भाई भाई के खिलाफ खड़ा होता है और गुरु शिष्य के खिलाफ खड़ा होता है। यह पक्षवालों की कृपा है! उस समय सारे लोग एक-दूसरे की निन्दा में लगे रहते हैं। कैसी विचित्र स्थिति उत्पन्न हो जाती है। फिर चुनाव के कारण पड़े हुए आपसी भेद बहुत दिनों तक कायम रहते हैं। इससे कोई भी काम एक मति से नहीं होता है। सरकार भी यदि अच्छी योजना बनाती है तो उसमें भी समस्त लोगों का एक साथ सहकार नहीं होता। यदि किसी भी योजना में जनता सहकार नहीं करती है तो वह योजना कैसे सफल हो सकती है ? इसलिए अब सारी योजनाओं को सफल बनाने तथा गाँवों को एक करने के लिए इन पक्षोंवाले लोगों को गंभीरतापूर्वक सोचना चाहिए।

विचार को आगे आने दें

हमारा सदा से सौभाग्य रहा है कि हमें एक के बाद एक अच्छे-से-अच्छे नेता मिल रहे हैं। स्वतन्त्रता-आन्दोलन के समय दादाभाई नौरोजी गये तो लोकमान्य तिलक मिल गये और लोकमान्य गये तो गांधीजी मिल गये। इसलिए स्वराज्य-प्राप्ति के पश्चात् यदि हम लोग थकान मिटाने के लिए भोगासक्त हो जायँगे तो एक के बाद दूसरा नेता मिलने का जो क्रम है, वह टूट जायगा। यह क्रम भी तभी रहेगा, जब कि देश में कोई-न-कोई उत्साहवर्धक कार्य चलता रहेगा। कार्यक्रम ही मानव को पैदा करता है। 'युग-युग में अवतार होता है' इसका अर्थ भी यही है कि हर युग में एक-एक आकांक्षा उत्पन्न होती है और उसे आकार देकर सामूहिक अभिक्रम करनेवाला एक आदमी होता है। मरने पर वही आदमी अवतार हो जाता है। विश्व में कोई तीव्र आकांक्षा उत्पन्न नहीं होती तो महापुरुष नहीं होते, ऐसी भी बात नहीं है। वे लोग होते हैं, पर एकान्त में तपस्या करते रहते हैं।

लोगों में अनुकूल आकांक्षाएँ न हों तो महापुरुष साधक रूप में रहते हैं। वे अवतार के रूप में प्रकट नहीं होते। पुराने जमाने में तो वे हिमालय में रहते थे, पर इस जमाने में कहीं दो-चार एकड़ जमीन का टुकड़ा लेकर खेती करते हैं। उनकी साधना ध्यान-योगात्मक नहीं, कर्मयोगात्मक होती है। तीव्र आकांक्षाओं के अभाव में वे परमेश्वरीय आदेश लेकर सामने आने के बजाय जंगली फूलों की तरह एकांत में ही मुर्झा जाते हैं। उनका जीवन वहीं सार्थक हो जाता है। शास्त्रों में उनके लिए 'अव्यक्तलिंगाः, अव्यक्ताचाराः' लिखा गया है। साधारणतः वे नहीं पहचाने जाते। उन्हें पहचानने के लिए एक स्वतन्त्र ग्रहण-शक्ति की आवश्यकता रहती है। विद्युत्-शक्ति के सर्वत्र फैले रहने पर भी इसे ग्रहण करने के लिए यन्त्र-साधनों की आवश्यकता होती है। अतः हम सब लोगों का कर्तव्य है कि सेवा-परायण बनकर एक विचार को सामने लायें और महापुरुषों के लिए काम करने की स्थिति उत्पन्न कर दें। यदि हम समाज को एकाग्र नहीं बनायेंगे तो जो शक्ति उत्पन्न होगी, वह परस्परविरोधी होगी। उससे समाज की प्रगति कुंठित हो जायगी।

मैं किसी स्वतन्त्र 'पक्षमुक्त समाज' नामक संगठन को खड़ा करना नहीं चाहता। मेरी सिर्फ यही कामना है कि लोग पक्षमुक्त होकर सेवा करें ! सेवा के लिए सेवा करें। इसके अलावा उनका कोई उद्देश्य न हो। जब हिन्दुस्तान में ऐसे सेवक तैयार होंगे, तभी निर्माण की गाड़ी आगे बढ़ेगी। राष्ट्रीय विकास के लिए मैं आप लोगों से ऐसी ही सेवा की अपेक्षा रखता हूँ।

सरकारी सेवक कैसे हों ?

स्वराज्य-प्राप्ति के बाद सारी स्थिति में अन्तर आ गया है। अब सरकारी कर्मचारियों को अपनी कार्य-पद्धति में भी फर्क करना पड़ेगा और लोगों को सरकारी कर्मचारियों के

प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण रखना पड़ेगा। स्वराज्य-प्राप्ति के पूर्व जनता का और सरकारी अधिकारियों का जैसा सम्बन्ध था, वैसा सम्बन्ध अब नहीं रहना चाहिए। पहले दोनों एक-दूसरे से दूर-दूर रहते थे। सरकारी लोगों को लोग दूसरी ही नजरों से देखते थे और सरकारी लोग भी जनता को दूसरी ही दृष्टि से देखते थे।

धूलिया जेल की बात है। उन दिनों हम जेल में थे। वहाँ हमारे जेलर वैष्णव थे। वे कल ही मुझसे मिलने आये थे। उनकी मुझपर अत्यन्त श्रद्धा है। ऐसा लगता है—मानो उनसे पूर्वजन्म का ही कोई नाता हो। उस समय उन्होंने सारी जेल का कारोबार मुझे सौंप दिया और वे स्वयं नाममात्र के जेलर बन गये थे। इतना होने पर भी अन्य राजनैतिक कैदियों के साथ उनका विरोध रहता ही था। लोग भी उनके प्रति तीव्र विरोध प्रदर्शित करते थे। उस समय समस्त सरकारी नौकरों के प्रति लोगों की धारणाएँ अच्छी नहीं थीं। लेकिन वे धारणाएँ बदलनी होंगी। वे धारणाएँ भी जादू की छड़ी घुमाते ही नहीं बदल जायँगी। उसके लिए भी अधिकारियों को अपने व्यवहारों में परिवर्तन करना होगा। अब उन्हें अपने आपको जनता का सेवक मानना होगा। स्वामी के प्रति सेवक की जो भावना होती है, वही भावना अभिव्यक्त करनी होगी। जनता को लगना चाहिए कि सरकारी नौकर हमारे ही स्नेही, हमारे ही सखा और सेवक हैं। जिस प्रकार माता के आ जाने पर बच्चा बाग-बाग हो जाता है, उसी प्रकार सरकारी अधिकारियों के पहुँचने पर लोगों को आनंदानुभूति होनी चाहिए। उन्हें यह लगना चाहिए कि अब हमारे संकट दूर करनेवाले आ गये हैं। इस तरह दोनों को एक-दूसरे के प्रति स्नेहल बर्ताव करना चाहिए।

सरकारी अधिकारियों का कर्तव्य

प्रजा का उत्साह केवल टैक्स लगाने से बढ़नेवाला नहीं है, उसके लिए तो आपको भी कुछ-न-कुछ करना होगा। इसीलिए मैंने आपके सामने एक सादी-सी बात यह रखी है कि आपके पास जो कुछ है, उसका एक अंश समाज-सेवा के लिए दें। समस्त सरकारी कर्मचारी अपनी सम्पत्ति का अमुक अंश सम्पत्ति-दान के तौर पर देकर ही खायँ तो लोगों को विश्वास हो जायगा कि सचमुच ये लोग हमारे हित में काम करते हैं। फिर उन्हें लोक-प्रेम प्राप्त होगा। जितना लोक-प्रेम आप लोग प्राप्त कर सकते हैं, उतना और कोई प्राप्त नहीं कर सकता। क्योंकि सरकार के जरिये आप लोगों के पास सेवा करने के बहुत से साधन उपलब्ध रहते हैं। उनका सदुपयोग करने की आवश्यकता है। यदि आप ऐसा करें तो निश्चय ही आपको सरकार की तरफ से अधिकार मिलने के साथ-ही-साथ लोक-प्रेम भी प्राप्त होगा। यह एक बहुत बड़ी दुर्लभ चीज होगी। शास्त्रों में कहा है कि "नृपतिजनपदानां दुर्लभः कार्यकर्ता"—सरकार की भी सेवा करे और जनता की भी सेवा करे, ऐसे कार्यकर्ता दुर्लभ ही होते हैं। दोनों में विरोध होता है। प्रायः सरकारी नौकर लोक-प्रिय नहीं होते और लोक-सेवक सरकार के प्रियपात्र नहीं होते। लोक-सेवक जनता के कष्टों को स्पष्ट रूप से सरकार के सम्मुख रखते हैं। इससे राज्यकर्ताओं को परेशानी होती है। इसलिए आप अगर सम्यक् लोक-सेवा को स्वीकार कर लेते हैं तो दोनों के प्रियपात्र बन सकते हैं।

आजकल कार्यकर्ताओं का बहुत अभाव है। ये कार्यकर्ता कहाँसे लाये जायँ? आप सरकारी खर्च पर मेरा काम चलाने लग जायँ तो मेरे उस प्रश्न का समाधान हो सकता है। सरकार भी चाहती है कि आप हमारा काम करें। यदि वह नहीं चाहती तो इस तरह मेरे व्याख्यानों का आयोजन क्यों करती? सरकार जानती है कि 'यह व्यक्ति लोक-शक्ति का उपासक है।' आज नहीं तो कल सरकार मिटनी ही चाहिए, ऐसे विचार ठीक लगते हैं। इसलिए अपने ही खर्च से वह मेरा काम चलाना चाहती है। मैं आशा करता हूँ कि आप भी मेरे इस काम को उठा लेंगे। इस काम को करने से आपकी तरक्की होगी ही, ऐसा विश्वास तो मैं आपको नहीं दिला सकता, लेकिन इतना विश्वास जरूर दिला सकता हूँ कि यह काम करने से आप लोगों पर कोई भी नाराज न होगा।

आप लोग बाबा का विचार समझाने के अधिकारी हैं। इसी तरह दूसरे लोग भी अधिकारी हैं। सभी लोग ग्रामदान, भूदान के विचार को समझें और जनता को समझायें। जब आप जनता में मालकियत मिटाने की बात समझाने के लिए जायँगे तो लोग आपसे पूछेंगे कि क्या आपने अपनी मालकियत मिटा दी है? कोई भी कार्यकर्ता त्याग की बात समझाने के लिए जाय तो वह बात अच्छी लगने पर भी लोग उसे त्यागी के मुख से ही सुनना चाहते हैं। इसलिए आप पहले अपनी मालकियत का त्याग करने की दिशा में सोचें और आपको जो कुछ वेतन मिलता है, उसका एक हिस्सा दे सकें तो अवश्य दें। ● ● ●

परमात्मा का चिन्तन वही करता है, जो अपने को भूल जाता है। मुझे यह जो शरीर, बुद्धि और मन मिला है, उसका उपयोग सबके लिए हो, ऐसी भावना रखनी चाहिए। फिर उसके वास्ते शरीर को खिलाना पड़े तो वह सब मैं करूँगा। क्योंकि मेरा शरीर बीमारी से पीड़ित रहे तो मैं दूसरों की सेवा नहीं कर सकता। इसलिए शारीरिक और मानसिक आरोग्य की चिन्ता करनी होगी। लेकिन वह भी सबकी सेवा के लिए होनी चाहिए। जब ऐसी भावना होगी कि मेरा सब कुछ सबकी सेवा के लिए है, तब परमात्मा का चिन्तन होगा। ● ● ●

अनुक्रम

१. दिल्ली, पंजाब, मध्यप्रदेश, पेप्सू और कश्मीर के...
सर्वोदय-नगर २८ फरवरी '५९ पृ० २६९
२. अपने काम की व्यवस्थित योजना बनाइये।
सर्वोदय-नगर १ मार्च '५९ „ २७१
३. ग्राम-स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है...
गांगड़ १२ दिसम्बर '५८ „ २७२
४. सरकारी अधिकारी निःस्पृह बनकर राष्ट्र की सेवा करें
बढ़वाल सिटी ११ दिसंबर '५८ „ २७५

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन, राजघाट, काशी द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित
फोन : १२८५ तार—प्रकाशन, राजघाट, काशी।